ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46 | अंक 30 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 26 जून, 2023 से रविवार 02 जुलाई, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 |
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

भारत में क्यों आवश्यक है– समान नागरिक संहिता कानून?

हर स्तर पर सभी आर्य संस्थाएं एवं देशवासी सरकार को भेजें अपने सुझाव

यूं तो प्रत्येक भारतवासी अपने भारत देश की इकाई है लेकिन सबके लिए सबसे प्रमुख और सबसे बड़ा उसका अपना राष्ट्र ही होता है। अत: जब जब राष्ट्र की एकता, अखंडता, उन्नति, प्रगति की बात सामने हो तो सभी नागरिकों को अपने मत, संप्रदाय और निजी स्वार्थों को भूलकर देश के लिए एकजुट होकर कार्य करना चाहिए। क्योंकि सबसे बड़ी भक्ति और सबसे बड़ी सेवा राष्ट्र की ही मानी जाती है। आज भारत सरकार द्वारा समान नागरिक संहिता बिल को लाने की बात लगातार चल रही है, इस बिल के लाभ और हानि को समझें बिना कुछ लोग इसका विरोध भी कर रहे हैं। हालांकि अगर पूरे देश को एक परिवार माना जाए तो सबके लिए एक समान नियम और कानून का होना आवश्यक है, नहीं तो सब अगर अपनी मनमर्जी से चलेंगे तो परिवार की उन्नति प्रगति रुक जाएगी। महान नीतिज्ञ चाणक्य ने भी कहा है कि अगर किसी परिवार में सभी लोग अपनी अपनी चलाएंगे तो वह परिवार पनप ही नहीं पाएगा। उसकी आगे बढ़ने की रफ्तार रुक जाएगी। इसलिए विशाल भारत की विराट शक्ति को विश्व स्तर पर स्थापित करने के लिए समान नागरिक संहिता कानून लागू होना ही चाहिए और सभी देशवासियों को इसके महत्व को भी समझना चाहिए।

वस्तुत: समस्त भारतवासियों के लिए एक समान नागरिक संहिता एक पंथनिरपेक्ष कानून है, जो सभी धर्मों के लोगों के लिए समान रूप से लागू होता है। यूनिफॉर्म सिविल कोड लागू होने से हर मजहब के लिए एक जैसा कानून आ जाएगा। अर्थात मुस्लिमों को भी तीन शादियां करने और पत्नी को महज तीन बार तलाक बोले देने से रिश्ता खत्म कर देने वाली परंपरा खत्म हो जाएगी। वर्तमान में देश में हर धर्म के लोग इन मामलों का निपटारा अपने पर्सनल लॉ के अधीन करते हैं। फिलहाल मुस्लिम, ईसाई और पारसी समुदाय का पर्सनल लॉ है जबकि हिन्दू सिविल लॉ के तहत हिन्दू, सिख, जैन और बौद्ध आते हैं। यू.सी.सी. के समर्थकों का तर्क है कि यह लैंगिक समानता को बढ़ावा देने, धर्म के आधार पर भेदभाव को कम करने और कानूनी प्रणाली को सरल बनाने में मदद करेगा। हालांकि, विरोधियों का कहना है कि यह धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लंघन करेगा और व्यक्तिगत कानूनों को प्रत्येक धार्मिक समुदाय के विवेक पर छोड़ देना चाहिए।

अति महत्वपूर्ण सूचना

आप सभी भारत के नागरिकों को सूचित किया जाता है कि, भारत के 22वें विधि आयोग (कानून कमीशन/लॉ कमीशन) द्वारा, दिनांक- 14/06/2023 को, समान नागरिक संहिता (यूनिफॉर्म सिविल कोड) विषय पर, भारत के आम नागरिकों तथा भारत की पंजीकृत धार्मिक संस्थाओं से, उनके सुझाव व विचार मांगे गए हैं।

यह सुझाव व विचार, दिनांक- 13/07/2023 तक, ई-मेल के माध्यम से, अपने घर में बैठे हुए ही, अपने मोबाइल, लैपटॉप, या कम्प्यूटर से, भेजे जा सकते हैं। यह सुझाव व विचार, नीचे दिए गए ई-मेल पते पर अथवा लिंक पर भेजे जा सकते हैं:

ई-मेल : membersecretary-lci@gov.in

लिंक : https://legalaffairs.gov.in/law_commission/ucc/

आप सभी भारत के आम नागरिकों व धार्मिक संस्थाओं से निवेदन है कि, समान नागरिक संहिता के पक्ष में, अपने सुझाव व विचार, भारत विधि आयोग को, अवश्य भेजें। ताकि भारत के सभी नागरिकों, समाजों, धर्मों, पंथों, मजहबों, रिलिजनों, धर्मों पर समान कानून लागू हों सकें, न कि अलग-अलग कानून। यह संदेश सभी को भेजें!

भोपाल मध्यप्रदेश में भारत के प्रधानमंत्री ने भी देश वासियों को समान नागरिक संहिता कानून की व्याख्या करते हुए अपने भाषण में कहा– एक ही परिवार में दो लोगों के अलग-अलग नियम नहीं हो सकते। ऐसी दोहरी व्यवस्था से घर कैसे चल पाएगा? उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने बार-बार कहा है। सुप्रीम कोर्ट डंडा मारता है। कहता है कॉमन सिविल कोड लाओ लेकिन ये वोट बैंक के भूखे लोग इसमें अड़ंगा लगा रहे हैं। लेकिन भाजपा सबका साथ, सबका विकास की भावना से काम कर रही है। प्रधानमंत्री ने कहा, जो 'ट्रिपल तलाक' की वकालत करते हैं, वे वोट बैंक के भूखे हैं और मुस्लिम बेटियों के साथ घोर अन्याय कर रहे हैं। 'ट्रिपल तलाक' न सिर्फ महिलाओं की चिंता का विषय है, बल्कि यह समूचे परिवार को नष्ट कर देता है।

पीएम के बयान के बाद अब यू.सी.सी. को लेकर ए.आई.एम.आई.एम. चीफ असदुद्दीन ओवैसी ने अपनी विपरीत प्रतिक्रिया दी और ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल बोर्ड ने मंगलवार देर रात पीएम मोदी के यू.सी.सी. पर दिए बयान के बाद ऑनलाइन इमरजेंसी बैठक की, इसमें यू.सी.सी. के विरोध का फैसला लिया गया है, मीटिंग में बोर्ड अध्यक्ष सैफुल्ला रहमानी, मौलाना खालिद, रशीदी फिरंगी महली और बोर्ड के सदस्य और कानूनी जानकार शमिल हुए, बैठक में फैसला लिया गया कि लॉ कमीशन के सामने यू.सी.सी. को लेकर वे अपना पक्ष रखेंगे और कागजात भी पेश करेंगे, हालांकि इससे पहले भी मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के अलावा अन्य मुस्लिम संगठन यू.सी.सी. का विरोध कर चुके हैं। इसके साथ साथ अपनी आदत के अनुसार यू.सी.सी. पर मुस्लिम संगठनों के अलावा कांग्रेस, आरजेडी, जेडीयू और टीएमसी समेत कई दलों ने पीएम को घेरने की कोशिश की है। कुछ मुस्लिम नेताओं ने यू.सी.सी. बिल का विरोध करते हुए भावनाओं को भड़काने वाली भाषा का भी कुछ हद तक प्रयोग किया है।

यहां पर हमें यह तो अवश्य सोचना चाहिए कि समान नागरिक संहिता बिल को लेकर जो प्रधानमंत्री जी ने कहा है वह सही है या गलत है? महिला तो महिला है चाहे वह हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, पारसी या जैन अथवा कोई भी हो, सबकी संवेदनाएं तो एक जैसी ही होती हैं, सबके प्रति समान भाव होना ही चाहिए या फिर अन्य जो समान नागरिक संहिता के मसौदे हैं, उनमें भी भेदभाव क्यों और किसलिए किया जाए? अगर कोई इस बिल का विरोध भी करता है तो वह उसका निजी स्वार्थ ही होगा, वरना तो यह सबके लिए एक समान अधिकार प्राप्त होना, हर तरह के भेद भाव, ऊँच-नीच को समाप्त करना हर तरह से उचित ही है। और इससे भी आगे भारत सरकार ने पूरे देशवासियों से इस बिल को लेकर उनके सुझाव मांगे हैं, तो हमें अपनी तरफ से उपयुक्त सुझाव देने ही चाहिए, अब तक जानकारी के अनुसार 8,00,000 सुझाव यू.सी.सी. बिल को लेकर सरकार को प्राप्त हुए हैं, इसको तीव्र गति से बढ़ाना चाहिए और सबको मिलकर के देश की एकता और अखंडता के लिए आगे आना चाहिए।

समान नागरिक संहिता का अर्थ है कि समाज के सभी वर्गों को उनके धर्म के बावजूद समान व्यवहार किया जाएगा, जो एक राष्ट्रीय नागरिक संहिता के अनुसार समान रूप से लागू होगा। विवाह, तलाक, रखरखाव, विरासत, गोद लेने और संपत्ति के उत्तराधिकार जैसे क्षेत्रों को यह कानून एकरूपता के साथ कवर करेगा। अब यहां पर विचारणीय यह भी है कि जब आपराधिक मामलों में सभी समुदाय के लिए एक कानून का पालन होता है तब सिविल मामलों में अलग-अलग कानून क्यों है? हमें यह समझना होगा कि निजी कानूनों में सुधार के अभाव में न तो महिलाओं की स्थिति बेहतर हो पा रही है और न ही उन्हें सम्मानपूर्वक जीने का अवसर मिल पा रहा है। असल में इससे सबसे बड़ी आजादी तो उन मुस्लिम महिलाओं को मिल सकेगी जो बहुविवाह और हलाला जैसी प्रथाओं का विरोध करती रहीं हैं। इससे न केवल समानता जैसे संवैधानिक अधिकार का लाभ प्राप्त होगा बल्कि समाज-सुधार जैसी पहल भी कामयाब हो सकेंगी। जब हर भारतीय पर एक समान कानून लागू होगा तो देश के सियासी दल वोट बैंक वाली सियासत भी नहीं कर सकेंगे और भावनाओं को भड़का कर वोट मांगने की गलत परंपरा पर भी लगाम लग सकेगी। अत: सभी आर्य संस्थाएं एवं देशवासी इस महत्वपूर्ण विषय पर अपने सकारात्मक सुझाव सरकार को अवश्य भेजें।

-संपादक

वेदवाणी-संस्कृत

देवासुर संग्राम में आत्मदेव का विजय

वेद-स्वाध्याय

त्वं वलस्य गोमतोऽपावरद्रिवो बिलम्।
त्वां देवा अविभ्युषस् तुज्यमानास आविशुः॥
-ऋ० 1 । 11 । 5
ऋषिः- जेतामाधुच्छन्दसः॥ देवता- इन्द्रः ॥ छन्दः- अनुष्टुप्॥

शब्दार्थ- **अद्रिवः**=हे वज्रवाले इन्द्र! **त्वम्**=तुम **गोमतः**=गौओं को रोक रखने वाले **वलस्य**=वल के **बिलम्**=बिल को **अपावः**=खोल देते हो। तब **देवाः**=सब देव **तुज्यमानासः**=हिंसित होते हुए, काँपते हुए भी **अविभ्युषः**=निर्भय हुए-हुए **त्वाम्**=तुझमें फिर **आविशुः**=प्रविष्ट होने लगते हैं।

विनय- हे इन्द्र! तुम 'वल' असुर का संहार कर उस द्वारा छिपा रखी हुई देवों की गौओं को फिर देवों को दिला देते हो। तुम्हारा यह नित्य इतिहास हममें से प्रत्येक जीव में दोहराया जा रहा है। हमारे आत्मिक ऐश्वर्य ऐसे खोये जा चुके हैं कि हमें उनके बारे में कुछ पता ही नहीं है। यह हमें ढकने वाला[1] 'वल' अज्ञानासुर ही है, जिसने हमारी आत्मिक ऐश्वर्यों की गौओं को छिपा रखा है। इसके वशीभूत हुए हम लोग अज्ञाननिद्रा में न जाने कब से पड़े सो रहे हैं, परन्तु हे इन्द्र! जब तुम इस अज्ञानान्धकार का संहार कर देते हो, अज्ञान मेघ का भेदन कर देते हो, गौओं को छिपा रखने वाले इस 'वल' के बिल को खोल देते हो, हमारी प्रसुप्तावस्था में पड़ी सुषम्ना के विवर का उद्घाटन कर देते हो, शक्ति को जगा देते हो, तब जो आश्चर्यमय अवस्था आती है वह तो स्वयं देखने ही योग्य है। तब वे छिपी गौएँ निकल पड़ती हैं, एक-से-एक अद्भुत आत्मिक ऐश्वर्य प्रकट होने लगते हैं। अन्दर प्रकाश हो जाता है, आनन्ददायक कम्पन होते हैं और आनन्द की लहरें उठती हैं तथा हे आत्मन्! तुम्हारी सब दिव्य शक्तियाँ आ-आकर तुमसे संयुक्त होने लगती हैं। हे इन्द्र! हम तुम्हारे पराक्रम की क्या कथा कहें? वलासुर तो अपने अन्धकार द्वारा तुम्हारे देवों को उनके ऐश्वर्यों से पृथक् कर चुका होता है और तुमहारे इन देवों को तुमसे भी विच्छिन्न कर चुका होता है, पर ऐसी अवस्था पहुँच जाने पर भी तुम अपने वज्र से जब उसका संहार करने लगते हो एकदम प्रकाश की धाराएँ बहने लगती हैं और उस प्रकाश में वे सब ऐश्वर्य देवों को फिर मिल जाते हैं एवं ऐश्वर्ययुक्त हुए ये देव कभी-कभी 'वल' के प्रहारों से मारे जाते हुए और काँपते हुए भी अब निर्भय होकर तुममें प्रविष्ट होने लगते हैं, आ-आकर तुमसे संयुक्त होने लगते हैं।

1. 'वलो वृणीतेः'-निरुक्त 6-2।

-:साभारः- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की विदेश यात्रा
विकास के नए अध्याय के शुभारंभ हेतु आर्य समाज की ओर से बधाई

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी अमेरिका और मिस्र की 5 दिवसीय राजकीय यात्रा करके स्वदेश लौट आए। राष्ट्रपति जो बाइडेन के निमंत्रण पर अमेरिका की हाई-प्रोफाइल यात्रा के बाद पीएम मोदी शनिवार को दो दिवसीय यात्रा पर मिस्र पहुंचे थे। यहां प्रधानमंत्री मुस्तफा मैडबौली ने एयरपोर्ट पर उनका जोरदार स्वागत किया। 1997 के बाद यह पहला अवसर था जब किसी भारतीय प्रधानमंत्री ने मिस्र की द्विपक्षीय यात्रा की है, प्रधानमंत्री मोदी ने 20 जून को अपनी पांच दिवसीय यात्रा में 21 से 24 जून तक अमेरिका का दौरा किया, उनकी अमेरिका यात्रा न्यूयॉर्क से शुरू हुई, जहां उन्होंने 21 जून को 9वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में एक ऐतिहासिक कार्यक्रम का नेतृत्व किया, मोदी जी से पूर्व 2009 में तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी अमेरिका के राजकीय दौरे पर गए और इससे पहले पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णनन पहले भारतीय नेता थे, जिन्हें 1963 में 3 से 5 जून तक राजकीय दौरे पर गए थे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की अमेरिकी और मिश्र दोनों विदेश यात्राएं अपने आपमें अत्यंत सफल और सकारात्मक सिद्ध हुई। हालांकि अमेरिका की ऐतिहासिक यात्रा को लेकर यहां भी और वहां भी भारत सरकार की नीतियों और कामकाज को लेकर कुछ लोगों ने काफी नकारात्मकता फैलाने की नाकाम कोशिशें की, भारत में अल्प संख्यकों की सुरक्षा के मुद्दे को उछालते हुए पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अमेरिका के राष्ट्रपति जो वाइडेन से प्रधानमंत्री मोदी से बात करने के लिए स्टेटमेंट दिया, वहां के कुछेक संगठनों ने भी मोदी जी का विरोध करने का प्रयास किया, भारत में भी उनके अमेरिका जाने से पहले और वहां पहुंचने पर भी लोगों ने सोशल मीडिया और टी.वी. डिबेट में खूब दुष्प्रचार किया। मिश्र की यात्रा के विषय में भी कई तरह की बातें की गई, लेकिन भारत राष्ट्र के माननीय प्रधानमंत्री जी ने संपूर्ण विपरीत वातावरण को अनुकूल बनाते हुए भारत के गौरव को विश्व स्तर पर बढ़ाकर यह सिद्ध कर दिया कि आप केवल भारत में ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व के सबसे लोकप्रिय और सूझबूझ वाले नेता हैं। अमेरिका के साथ जो भारत के अनुबंध हुए हैं वे सब भारत और अमेरिका दोनों देशों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे। आप हमेशा भारत का मस्तक ऐसे ही ऊंचा करते रहें, विश्व पटल पर तिरंगे की आन बान और शान को बढ़ाते रहें। आर्य समाज की ओर से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की ऐतिहासिक सफल यात्रा के लिए प्रधानमंत्री जी सहित सभी देशवासियों को हार्दिक बधाई।

प्रधानमंत्री की इस अमेरिका यात्रा के दौरान अमेरिका की प्रतिष्ठित कंपनी जनरल इलेक्ट्रिक एयरोस्पेस और हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के बीच एक अहम समझौता हुआ है, इस डील के तहत भारत में बने लाइट कॉम्बेट एयरक्राफ्ट तेजस एम. के. 2 के लिए जी.ई.एफ.414 इंजन बनाया जाएगा। इस अनुबंध ने एक स्पष्ट संदेश दिया है कि इस समझौते के साथ ही भारत के साथ तकनीक साझा न करने का दौर समाप्त होना शुरू हो गया है। ज्ञात हो कि बीते सालों में भारत को उभरती हुई अहम तकनीकें हासिल करने से वंचित रखा गया था। साल 1960 से 1990 के दौर में भारत के प्रति इस रुख में काफी सख्ती आई थी, साल 1974 में हुए भारत के पहले परमाणु परीक्षण के बाद न्यूक्लियर सप्लायर ग्रुप का गठन किया गया, जिससे भारत को बाहर रखा गया था। जेट इंजन के साथ साथ ड्रोन खरीदने, स्पेस मिशन और भारत में चिप बनाने से जुड़े समझौते अहम घोषणाओं में शामिल हैं, लेकिन लड़ाकू विमान के लिए इंजन बनाने की घोषणा काफी अहम है।

इसके अतिरिक्त भारतीय उद्योग जगत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा के परिणाम की सराहना की है। ए.एन.आई. से बात करते हुए, महिंद्रा डिफेंस एंड एयरोस्पेस के अध्यक्ष, एस.पी. शुक्ला ने पीएम मोदी की अमेरिकी यात्रा पर कहा: कि यह एक ट्रेंड-सेटिंग यात्रा है। पीएम मोदी ने दूसरी बार अमेरिकी कांग्रेस को संबोधित करते हुए एक बहुत ही महत्वपूर्ण संदेश दिया है जो दोनों देश साथ मिलकर काम करना चाहते हैं। फेडरेशन ऑफ इंडियन चौंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) के अध्यक्ष शुभ्र कांत पांडा ने कहा कि पीएम मोदी की अमेरिका की ऐतिहासिक यात्रा सेमीकंडक्टर रक्षा अधिग्रहण, महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी तक पहुंच, अंतरिक्ष सहयोग के लिए आर्टेमिस समझौते और कई महत्वपूर्ण परिणामों के साथ बहुत सफल रही है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

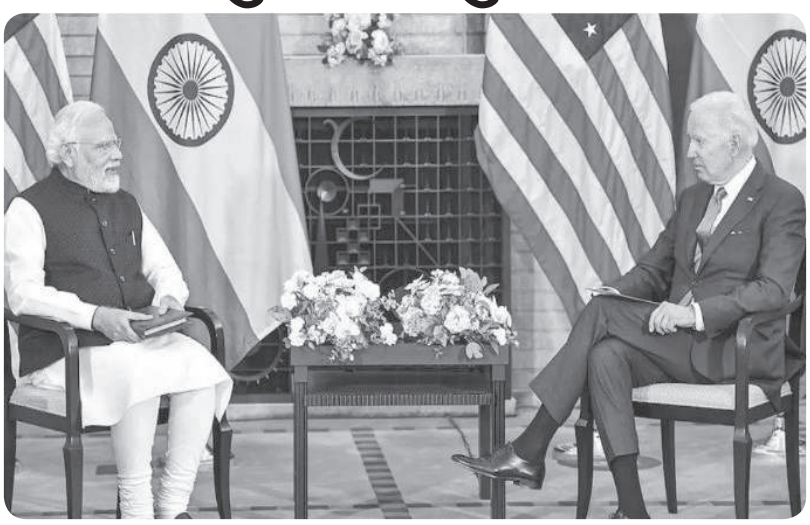

"प्रधानमंत्री की इस अमेरिका यात्रा के दौरान अमेरिका की प्रतिष्ठित कंपनी जनरल इलेक्ट्रिक एयरोस्पेस और हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के बीच एक अहम समझौता हुआ है, इस डील के तहत भारत में बने लाइट कॉम्बेट एयरक्राफ्ट तेजस एम.के. 2 के लिए जी.ई.एफ.414 इंजन बनाया जाएगा। इस अनुबंध ने एक स्पष्ट संदेश दिया है कि इस समझौते के साथ ही भारत के साथ तकनीक साझा न करने का दौर समाप्त होना शुरू हो गया है। ज्ञात हो कि बीते सालों में भारत को उभरती हुई अहम तकनीकें हासिल करने से वंचित रखा गया था। साल 1960 से 1990 के दौर में भारत के प्रति इस रुख में काफी सख्ती आई थी, साल 1974 में हुए भारत के पहले परमाणु परीक्षण के बाद न्यूक्लियर सप्लायर ग्रुप का गठन किया गया, जिससे भारत को बाहर रखा गया था। जेट इंजन के साथ-साथ ड्रोन खरीदने, स्पेस मिशन और भारत में चिप बनाने से जुड़े समझौते अहम घोषणाओं में शामिल हैं, लेकिन लड़ाकू विमान के लिए इंजन बनाने की घोषणा काफी अहम है। आर्य समाज की ओर से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की ऐतिहासिक सफल यात्रा के लिए प्रधानमंत्री जी सहित सभी देशवासियों को हार्दिक बधाई।"

साप्ताहिक स्वध्याय

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अमर जीवन दर्शन का साप्ताहिक स्वाध्याय

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर उनके जीवन दर्शन का स्वाध्याय सभी आर्यजनों के लिए अत्यंत आवश्यक है। ऐसा सभा की अंतरंग बैठक में अधिकारियों ने निर्णय लिया है। इसके लिए आर्य संदेश के साप्ताहिक अंक में हम एक नियमित कॉलम के रूप में महर्षि दयानंद की जीवनी को क्रमशः प्रकाशित करने का पूरा प्रयास करेंगे। सबसे अनोखे, अनूठे महर्षि का जीवन चरित्र यूं तो हमारे अनेकानेक महापुरुषों ने अपनी लेखनी से अद्भुत और अनुपम लिखा है, जिनमें पंडित लेखराम, स्वामी सत्यानंद, डॉ. रघुवंश, देवेंद्र मुखोपाध्याय, रामविलास शारदा, गोपाल राव, भवानी लाल भारतीय, पंडित लक्ष्मण आर्य उपदेशक और अन्य अनेक लेखक महापुरुषों के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त करते हुए यहां पर प्रस्तुत है- इंद्र विद्यावाचस्पति द्वारा लिखित महर्षि दयानंद का जीवन चरित्र जिसको हम क्रमशः प्रकाशित कर रहे हैं। यही कहूंगा कि जिसने भी महर्षि के आदर्श जीवन पर लिखने का सारगर्भित प्रयास किया है, वे मानवमात्र के लिए अनुकरणीय हैं। सभी पाठकों से अनुरोध है कि अपने स्वाध्याय के क्रम में महर्षि की जीवनी को शामिल करें और दूसरों को प्रेरित करें।

काठियावाड़ प्रान्त में मौरवी राज्य के टंकारा नामक छोटे से ग्राम में लालाजी कर्षनजी नाम का एक औदीच्य ब्राह्मण रहता था। विक्रमी सं- 1881 के फाल्गुन मास में उनके यहां एक बालक ने जन्म लिया। जन्मतिथि- फाल्गुन कृष्णपक्ष दशमी, बालक का नाम मूलशंकर रखा गया। संन्यास लेने पर इन्हीं मूलशंकर का नाम दयानन्द पड़ा। अम्बाशंकर के यहाँ औदीच्य ब्राह्मण होने पर भी भिक्षावृत्ति की परंपरा नहीं थी, लेन-देन का व्यवहार होता था और रियासत की ओर से जमींदारी भी प्राप्त थी, जो तहसीलदारी के बराबर थी।

इस प्रकार एक पुराने ढंग के सामान्य घर में दयानन्द का जन्म हुआ। यह जानने का कोई भी उपाय नहीं है कि दयानन्द के माता-पिता किस स्वभाव के थे। यह भी नहीं जाना जा सकता कि बालक मूलशंकर पर प्रभाव डालनेवाले गुरुओं में से कोई ऐसा भी था, जिसे 'असाधारण' कह सकें। प्रारम्भिक जीवन की घटनाओं के बारे में हमें जो कुछ भी पता चलता है, स्वामी दयानन्द का अपना कथन ही उसका साधन है, दूसरा कोई नहीं गुजरातियों में सन्तान से प्रेम बहुत अधिक होता है। परमहंस दयानन्द यह नहीं चाहते थे कि कहीं मेरा परिचय पाकर सम्बन्धी लोग न घेर बैठें। इस डर से वह अपने जीवन के प्रारम्भिक भाग का अधिक परिचय नहीं दिया करते थे। यदि उनके परिवार और शैशवावस्था के वृत्तान्त जानने का कोई साधन होता तो निःसन्देह हमें कई मनोरंजक और प्रेरक बातें जानने का अवसर मिलता। संसार में आकस्मिक कुछ भी नहीं है। जिन घटनाओं को हम आकस्मिक कहते हैं, उन्हें समझने की या तो शक्ति नहीं होती या साधन नहीं होते। शक्ति या साधन के अभाव से बाधित होकर हम अपने अज्ञान को आकस्मिक शब्द के आवरण में छिपाने का यत्न करते हैं। दयानन्द के चित्त में जो-जो विचार-तरंगें उत्पन्न हुई, जो-जो क्रान्तियां खड़ी हुई, वे आकस्मिक नहीं थीं, तथापि हमें यह मान लेना चाहिए कि उनके कारणों पर पूरा प्रकाश डालने के साधनों का हमारे पास अभाव है। हम नहीं जानते कि मूलशंकर के प्रारम्भिक गुरु कौन थे, और न यही ज्ञात है कि उनके खेल के साथी किस श्रेणी के थे। यह जानने का कोई उपाय नहीं है कि दयानन्द में जो दृढ़ता और निर्भयता थी, वह माता की ओर से प्राप्त हुई थी या पिता की ओर से। अस्तु, जो नहीं जाना जा सकता, उसे छोड़कर हम उसकी ओर दृष्टि डालते हैं जो जाना जा सकता है।

आठवें वर्ष में मूलशंकर का यज्ञोपवीत संस्कार किया गया, और गायत्री, संध्या, रुद्री आदि कण्ठस्थ कराए गए। इससे प्रतीत होता है कि मूलशंकर जी की स्मरण शक्ति प्रारम्भ से ही अच्छी थी। वह स्मरण शक्ति प्रचार के दिनों में दयानन्द को प्रतिपक्षियों के लिए असह्य बना देती थी। प्रचार के कार्य में कई पण्डितों की अपेक्षा वह महर्षि की अधिक सहायता करती थी। मूलशंकर जी के पिता स्वभाव से कुछ रूखे और कड़े प्रतीत होते हैं। सम्भव है, रियासत की और से उन्हें तहसीलदारी का कार्य सौंपा गया था, जिसके प्रभाव से उनके स्वभाव में उग्रता आ गई हो। उधर मूलशंकर जी की माता प्रेममयी प्रतीत होती हैं। वे अपने बच्चे से वैसा ही लाड करती थीं, जैसा लाड प्रायः माताएं किया करती हैं। मूलशंकर जी के अन्य सम्बन्धियों के विषय में हम इतना ही जानते हैं कि उनके एक चाचा थे जो उनसे बहुत स्नेह करते थे, और अपनी छोटी बहन से भी मूलशंकर का अधिक प्रेम था।

स्वास्थ्य संदेश

उत्तम स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है- नियमित दिनचर्या और शुद्ध आहार

प्रकृति के नियमों का पालन करना ही स्वस्थ रहने का आधार स्तम्भ हैं।

- सुबह सूर्य उदय से कम से कम 1/2 घंटो पहले बिस्तर त्याग देवें। अन्यथा सूर्य की प्रखर किरणें वास्तविक तेज व शक्ति को कमजोर करती हैं।
- सुबह उठते ही (उषा पान) दो-तीन गिलास रात्रि में घड़े या तांबे के बर्तन में रखा हुआ पानी पीवें। पानी क्रमशः बढ़ाएं।
- पानी पीने के तुरन्त बाद अफारा या गैस हो तो तुरन्त थोड़ा गर्म पानी पीवें। अलार्म की तरह शौच जाने की नियमित आदत डालें।
- शौचादि से निवृत्त होकर खुली-ताजी हवा में बिना बातचीत के शरीर के अंग-अंग को हिलाते हुए 1-2-3 किलोमीटर यथा शक्ति घूमें। लौटने पर हल्का-सा विश्राम करके योगासन, सूर्य नमस्कार, प्राणायाम, ध्यान, ईश जाप स्मरण जरूर करें।
- स्वच्छता एवं ताजगी के लिए प्रतिदिन बदन रगड़-रगड़ कर स्नान करें। साबुन का प्रयोग कम करें। शुद्धता के लिए मुल्तानी मिट्टी, बेसन, उबटन इत्यादि का प्रयोग करें।
- स्नान करते समय या सुबह उठने के पश्चात स्वच्छ एवं ताजा पानी मुंह में भरकर आंखों में 8-10 बार छीटें मारें। श्वास फूलने पर मुंह का पानी निकाल दें। कम से कम यह क्रिया तीन बार करें। आंखों की रोशनी में चमत्कार होगा। त्रिफला को मिट्टी के बर्तन में भिगोकर, निथारकर, इस पानी से भी आंखें धो सकते हैं। किसी भी किस्म की आंखों की तकलीफ हो तो प्राकृतिक चिकित्सक की सलाह अवश्य लेवें।
- स्कुटर इत्यादि चलाते समय आंखों को धूल-धक्कड़ से बचाने के लिए अच्छा चश्मा अवश्य पहनें।
- दिन में 4-5 बार ठंडे सादे पानी से आंखों में छींटें देवें।
- विश्राम करने के लिए हल्के किस्म का बिस्तर या रूई का गद्दा प्रयोग करें।
- बाजू का तकिया बनावें या पतला तकिया प्रयोग करें।
- टी.वी. दूर से देखें एवम् उपयोगी दृश्य ही देखें।
- रात को अधिक देर न जागें।
- दवाई आकस्मिक स्थिति में ही सेवन करें। अधिक दवाइयां फायदा कम नुकसान ज्यादा देती हैं।
- हमेशा सीधे पॉसर में बैठें या खड़े होवें। कमर सीधी रखें।
- गहरे श्वास-प्रश्वास लेवें।
- भोजन के तुरन्त बाद लघुशंका करने की आदत डालें।
  भोजन के बाद 5-15 मिनट वज्रासन में बैठें।
- दिन में कम से कम 8-10 गिलास (तीन लीटर) पानी पीवें।
- अधिक फुजले वाला आहार लेवें।
- दिन में मुख्य भोजन दो बार ही करें। सुबह अल्पाहार जैसे जूस, अंकुरित अनाज या छाछ इत्यादि ले सकते हैं।
- शाम के भोजन के पश्चात् एक-दो किलोमीटर की सैर करें।
- भोजन सोने के बीच कम से कम दो-तीन घंटे का अन्तर रखें।
- भोजन सात्विक, रुचिकर, खूब चबा-चबा कर एवं थोड़ी गुंजाईश रखकर खावें।
- कच्चे आहार जैसे अंकुरित अन्न, सलाद, मौसम के अनुसार फल, प्राकृतिक पेय एवम प्राकृतिक व्यंजन ज्यादा सेवन करें।
- भोजन के 1/2 घंटा पहले एवम एक घंटा बाद पानी पीवें।
- परिष्कृत एवम् गरिष्ठ भोजन से परहेज रखें।
- धूम्रपान, चाय, काफी, शराब, सॉफ्टड्रिंक्स तथा अन्य नशीले और मादक पदार्थ न लेवें।
- मांसाहार भोजन न लेवें।
- एकदम गरमागरम एवम ठन्डे पेय एवं भोजन न लेवें।
  शरीर के तापमान पर ही भोजन करें।
- स्वस्थ रहने के लिए पानी उपचार एवं शुद्ध शाकाहारी भोजन औषधि के समान हैं।
- स्वस्थ होने पर सप्ताह में एक दिन रसाहार या फलाहार पर उपवास करें।
- कब्ज होने पर सादे पानी का एनिमा व्यवहार में लावें।
- जो लोग खाना आधा, पानी दो गुना, व्यायाम तीन गुना, हंसना चार गुना, ध्यान पांच गुना करते हैं वे बीमार न के बराबर होते हैं।
- सप्ताह के अवकाश में शरीर शोधन करें। शरीर की मालिश लेकर धूप स्नान का आनन्द उठावें।
- किसी भी किस्म का कष्ट हो तो प्राकृतिक उपचार ही लेवें।

जीवन के आधारभूत तत्वों में भोजन का स्थानः-

- स्वस्थ एवम साफ-सुथरा स्थान
- शुद्ध वायु
- शुद्ध जल
- पर्याप्त धूप
- खुला आकाश
- शारीरिक श्रम और कम भोजन
- अधिक काम-क्रोध, लोभ-मोह, मानसिक चिन्ता यह रोग को जन्म देते हैं।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती कविताओं की रचना करें और पुरुस्कार पाएं

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के अवसर पर आर्य संदेश के सभी आयु वर्ग के पाठकों से अनुरोध है कि आर्य समाज के संस्थापक, वेदों के पुनरुद्धारक, महान समाज सुधारक, महर्षि दयानंद जी के प्रेरक और परोपकारी शिक्षाओं तथा जीवन के विभिन्न घटना क्रमों पर आधारित कविता की रचना करके संपादक, आर्य संदेश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली 110001, पर भेजें अथवा Email- aryasandeshdelhi@gmail.com करें। आपकी स्तरीय कविता को आर्य संदेश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा और विशेष अवसर पर आपको पुरुस्कृत भी किया जाएगा। अपनी कविता के साथ पूरा पता, फोन नंबर, ईमेल आई.डी. और पासपोर्ट साइज की फोटो भी भेजें।

सनातन सत्य के प्रकाशक थे हमारे गुरु दयानंद

सनातन सत्य के प्रकाशक थे हमारे गुरु दयानंद
वेद ज्ञान का नया सवेरा थे हमारे गुरु दयानंद

12 फरवरी, 1824 को जन्म हुआ गुजरात की धरा पर
अज्ञान अविद्या का अंधेरा छाया था पूरी मानवता पर
भारत माता जकड़ी थी पराधीनता की जंजीरों में
मानव जाति बंटी हुई थी जाति पंथ मजहब के घेरों में
स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक थे हमारे गुरु दयानंद
वेद ज्ञान का नया सवेरा थे हमारे गुरु दयानंद

8 वर्ष की अवस्था में यज्ञोपवीत संस्कार हुआ
गायत्री मंत्र, संध्या, रुद्री का पाठ कंठस्थ किया
14 की आयु में यजुर्वेद को याद कर व्याकरण में प्रवेश किया
माता पिता की आज्ञा और कुल परंपरा आदर्श प्रस्तुत किया
स्मरण शक्ति के शिखर पुरुष थे हमारे गुरु दयानंद
वेद ज्ञान का नया सवेरा थे हमारे गुरु दयानंद

सरल, सहज, सौम्य मन में जिज्ञासा का उदय हुआ
1894 विक्रम, माघ बंदी 14 को शिवरात्रि पर्व आया
अन्न और नींद त्याग के अखंड व्रत का संकल्प लिया
अंधेरी रात में सब सो गए उनके मन में बोध जाग गया
सच्चे शिव के परम उपासक थे हमारे गुरु दयानंद
वेद ज्ञान का नया सवेरा थे हमारे गुरु दयानंद

-संपादक

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर सम्पन्न

व्रतिका आर्या जी बनी आर्य वीरांगना दल की प्रमुख संचालिका

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर 16 जून से 23 जून 2023 तक आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला, दिल्ली में पूज्य डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्यवीर दल के सान्निध्य एवं मागर्दशन में संपन्न हुआ। शिविर में दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, छत्तीसगढ़ आदि सात प्रान्तों से आई 163 वीरांगनाओं ने भाग लिया। शिविर में आर्यवीर श्रेणी एवं शाखा नायक श्रेणी का प्रशिक्षण दिया गया। 33 वीरांगनाएं शाखा नायक श्रेणी में उत्तीर्ण हुई। दोनों श्रेणियों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहीं वीरांगनाओं को पुरस्कृत किया गया। आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला के व्यवस्थापकों द्वारा आमंत्रित अतिथि एवं व्यायाम शिक्षकों को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

आर्य वीरांगना दल का यह प्रथम राष्ट्रीय शिविर है। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्यवीर दल के अध्यक्ष स्वामी देवव्रत सरस्वती जी के सान्निध्य में सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का भी गठन किया गया, जिसमें व्रतिका आर्या जी को सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की प्रमुख संचालिका के रूप में नियुक्त किया गया। पूज्य डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी ने व्रतिका जी को सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की सम्पूर्ण जिम्मेदारी सौंपते हुए नियुक्ति पत्र प्रदान किया। सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की मंत्री मनीषा आर्या, दिल्ली एवं कोषाध्यक्ष मीनू आर्या, फरीदाबाद को नियुक्त किया गया। नियुक्ति के शेष अधिकार व्रतिका जी को सौंप दिए गए।

कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल द्वारा संचालित शिविर के समापन समारोह में भुजंगासन करती हुई आर्य वीरांगनाएं, परेड की सलामी लेते हुए डॉ. स्वामी देवव्रत जी, नवनियुक्त संचलिका व्रतिका आर्या जी, यज्ञ में संकल्प लेते हुए तथा पदाधिकारियों के साथ सामूहिक चित्र में आर्य वीरांगनाएं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की कल्याणकारी 'घर घर यज्ञ, हर घर यज्ञ' योजना के बढ़ते कदम

दिल्ली एन.सी.आर. की विभिन्न सेवा बस्तियों में प्रतिदिन हो रहे यज्ञ-संस्कारों के आयोजन

आर्य समाज के तीसरे नियम के अनुसार जैसे वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना आर्यो का परम धर्म है वैसे ही सर्वश्रेष्ठ यज्ञ कर्म को करना कराना भी हमारा परम कर्तव्य है। इसी भावना को ध्यान में रखकर सभा द्वारा 'घर घर यज्ञ, हर घर यज्ञ' की योजना निरंतर गतिशील है। इसके लिए सभा की एक युवा विद्वानों, कार्यकर्ताओं की पूरी टीम समर्पित भाव से निरन्तर इस सेवाकार्य में संलग्न है। जहां एक तरफ सभा के ये संवर्धक दिल्ली की कालोनियों में, शिक्षण संस्थानों में, घर परिवारों में यज्ञ करा रहे हैं वहीं उन सेवा बस्तियों में

> **"आर्य समाज हमेशा से जात-पात, छुआ-छूत, ऊँच-नीच का विरोधी रहा है, सभी को परमपिता परमात्मा की अमृत संतान हम मानते आए हैं तो क्या उन गरीब सेवा बस्तियों में हवन नहीं होने चाहिए? उनके बच्चों के नामकरण, जन्मदिन, विवाह, विवाह की वर्षगांठ और सुख-दुःख में वैदिक रीति से यज्ञ आदि कौन करेगा? पौराणिक बन्धु तो वहीं पर यज्ञादि अनुष्ठान करते कराते हैं जहां पर मोटी दान दक्षिणा प्राप्त हो, जहां ज्यादा मान सम्मान मिलता है वे तो वहीं जाते हैं। इसलिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा लगातार उन सभी लोगों के घर परिवारों में नामकरण, जन्मदिन, विवाह, विवाह की वर्षगांठ, शान्ति यज्ञ, प्रार्थना सभा आदि करा रही है, जिन्हें सभ्य समाज निर्धन बस्ती, जे. जे. कालोनी आदि नामों उपेक्षा के भाव से पुकारता है।"**

वेदमन्त्रों का उच्चारण हो रहा है, हवन की सुगंध फैल रही है जहां बहुत से लोग जाने में भी परहेज करते हैं। आर्य समाज हमेशा से जात-पात, छुआ-छूत, ऊँच-नीच का विरोधी रहा है, सभी को परमपिता परमात्मा की अमृत सन्तान हम मानते आए हैं तो क्या उन गरीब सेवा बस्तियों में हवन नहीं होने चाहिए? उनके बच्चों के नामकरण, जन्मदिन, विवाह, विवाह की वर्षगांठ और सुख-दुःख में वैदिक रीति से यज्ञ आदि कौन करेगा? पौराणिक बन्धु तो वहीं पर यज्ञादि अनुष्ठान करते कराते हैं जहां पर मोटी दान दक्षिण प्राप्त हो, जहां ज्यादा मान सम्मान मिलता है वे तो वहीं जाते हैं। इसलिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा लगातार उन सभी लोगों के घर परिवारों में नामकरण, जन्मदिन, विवाह, विवाह की वर्षगांठ, शान्ति यज्ञ, प्रार्थना सभा आदि करा रही है, जिन्हें सभ्य समाज निर्धन बस्ती, जे. जे. कालोनी आदि नामों उपेक्षा के भाव से पुकारता है। आर्य समाज उन्हें सेवा बस्ती कहता है, वहां पर रहने वालों को अपना भाई, बहन, बेटी के रूप में मानता है, उनके यहां हवन कराता है, सत्संग करता है, उन्हें जीवन जीने की कला सिखाता है, उन्हें वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारो से परिचित कराता है, उन्हें दुर्गुण, दुर्व्यसनों से बचने का संदेश देता है।

आज कल प्रतिदिन दिल्ली की किसी न किसी सेवा बस्ती में सभा द्वारा यज्ञ किया जा रहा है। वस्त्र बांटे जा रहे हैं, सत्संग किए जा रहे हैं। परिणामस्वरूप वहां के युवाओं में वैदिक संस्कारों का बीजारोपण सम्भव हो रहा है, वे नशा करने की आदत छोड़ रहे हैं, देश, धर्म, संस्कृति के प्रति जागरूक हो रहे हैं, अपने बड़े बुजुर्गों के प्रति सम्मान करने लगे हैं, गायत्री मंत्र और यज्ञ प्रार्थना सीख गए हैं। यज्ञ का प्रचार बढ़ रहा है, वे स्वयं यज्ञ कराने के लिए फोन करने लगे हैं। ईश्वर की कृपा और सभी आर्यजनों के सहयोग से 'घर घर यज्ञ, हर घर यज्ञ' की योजना फलीभूत हो रही है, इसे और आगे बढ़ाना है, हर घर तक पहुंचाना है।

आइए, सभा की इस कल्याणकारी योजना में सहभागी बनें, इन सेवा बस्तियों में यज्ञ करना कराना एक तरह से पूरी तरह परोपकार ही है। इसमें घी, सामग्री, समिधा, यज्ञपात्र, दरी, माइक और यज्ञ के ब्रह्मा आदि विद्वान, भजनोपदेशक आदि की व्यवस्था में सहयोग देने हेतु अथवा यज्ञ के आयोजन हेतु 9650183335 सम्पर्क करें।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में

वेद प्रचार यात्रा लगातार गतिशील, हर आयु वर्ग सहित बच्चों में उत्साह की लहर

पिछले दिनों वेद प्रचार रथ यात्रा द्वारा 22 मई से 4 जून के बीच रेश्मा कैंप, हरिजन कैंप, बांस बल्ली चौक, जवाहर कैंप, इत्यादि कीर्ति नगर में विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर प्रचार-प्रसार किया गया, इसके साथ ही विकास नगर डी.डी.ए. पार्क, जे.जे. कॉलोनी, वजीरपुर, शिव विहार आदि स्थानों पर हर आयु वर्ग के लोगों ने आर्य समाज के द्वारा आयोजित भजन, प्रवचन और यज्ञ में भाग लेकर स्वयं को गौरवान्वित और लाभान्वित अनुभव किया।

आर्य समाज के वैदिक सिद्धांतों, मान्यताओं और परम्पराओं के प्रचार-प्रसार, युवा पीढ़ी को नशामुक्त करने, परिवार, समाज और देश की रक्षा हेतु रिश्तों को बचाने, भेद-भाव मिटाने के, पर्यावरण को बचाने, महिला सशक्तिकरण एवं महर्षि की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का अभियान उत्साह पूर्वक बढ़ रहा है आगे

Vedic Cosmogony in Nutshell

Continuing the last issue

03 the 21st June and the 21st December, the sun's rays fall directly on the tropic of cancer or the Kark Rekha (on degrees to the north of equator) and the tropic of ,capricorn or the Makar Rekha (23 degrees to the south of .equator) respectively. In the former case, the day is the longest and the night is the shortest in the northern hemisphere, and in the latter case, the day is the shortest and the night is the longest in the said hemisphere. Of course, the position is just the opposite in the southern hemisphere.

In the northern hemisphere; from after the 21st March, days start getting longer and nights shorter till the 21st June, and the season changes from spring to the advent of summer and to the midsummer (comprissing the months of Chaitra, Vaishakh and Jyeshtha); from after the 21st June, days start getting shorter and nights longer till the 23rd September, when day and night become equal and the season changes from the midsummer to the decline of summer and to the advent of rain and to the full rain (comprising the months of Ashadh, Shravan and Bhadrapad); from after the 23rd September, days start getting shorter and nights longer till the 21st December, and the season changes from the full rain to the decline of rain and to autumn or the advent of winter and to the midwinter (comprising the months of Ashvin, Kartik and Agrahayan or Margashirsha); and from after the 21st December, days start getting longer and nights shorter till the 21st March, when day and night become equal, and the season changes from the midwinter to the decline of winter and to the advent of spring and to the full spring (comprising the months of Paush, Magh and Falgun).

In the southern hemisphere, the position is just the reverse of that in the northern hemisphere. When the day is the longest in the northern hemisphere and the season is midsummer, it's the shortest in the southern hemisphere and the season is midwinter, and vice versa. Similarly, when it's vernal equinox in the northern hemisphere, it's autumnal equinox in the southern hemisphere, and vice versa.

The portions of the earth, facing the sun, receive the sunlight, where it is said to be day, and the portions of the earth, away from the sun, not receiving the sunlight, are in darkness for the same period, where it is said to be night. As the earth rotates on its axis west to east, the portions of the earth, which were in darkness earlier, receive the sunlight and have day there, and the portions of the earth, which had day or the sunlight earlier, get away from the sun and consequently have darkness or night. This diurno-uocturnal rotation goes on continuously.

The moon, according to its position in its revolution right round the earth, receiving the sun's rays in the day time, conceives them in its craters and reflects the same to the earth at night, giving moonlight. The Vedas and the post-Vedic literatures are, by invitable implication, very specific on this point and state definitely that the sun is the highest representative of the power of generation, and the moon that of conception.

As the moon starts as a dead planet or satellite, there is no vegetation or life thereon. Armstrong and subsequent American astronauts have verified it. There is nothing in the Vedas and the actual observations of the American astronauts and the Russian cosmonauts to suggest that the moon is older than the earth.

The moon, coming in between the sun and the earth, causes solar eclipse, and the earth, coming in between the sun and the moon, causes lunar eclipse.

In process of time, when the earth, originating from the sun as a live mass gradually cools down to a certain depth and becomes fit for vegetation to grow and flourish thereon, grass and other vegetation grow thereon as the first created things. Herbs, creepers, various trees, and diverse grains and other natural eatables seem to be the creation of this early period. Then, naturally, seems to be the creation of insects, annelida, ambhibians, reptiles, ayes, mammals, big animals, including cattle or domesticable animals. The Vedas, especially the Yajurved, is very pointed in stating that wool.. bearing sheep is the earliest of quadrupeds.

It should be made quite clear that, according to the Vedas, there is nothing like the fabricated and tenaciously preached evolution. They speak of creation first of each species followed by procreation.

To be continued in next issue

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद

आर्य-आर्यावर्त्त-दस्यु-वर्ण

40-आर्य

धर्मी, श्रेष्ठ स्वभाव, गुण
उपकृति करते कार्य ।
आर्यावर्त्त-निवास से
कहलाते हैं 'आर्य' ।।52।।

41-आर्यावर्त्त

विन्धय, हिमाचल, सिन्धुनद,
ब्रह्मपुत्र-विस्तार ।
इनका मध्य प्रदेश ही
'आर्यावर्त्त' प्रसार ।।53।।

42-दस्यु

आर्य-वास या प्रकृति से
जो अनार्य है भिन्न ।
हिंसक, डाकू, चोर, अति
दुष्ट दस्यु के चिन्ह ।।54।।

43-वर्ण

जो गुण, कर्म, स्वभाव से
ग्रहण योग्य है, भेद ।
उसको 'वर्ण' पुकारता
आदिकाल से वेद ।।55।।

साभार :
सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

प्रेरक प्रसंग

महात्मा नारायण स्वामी जी के शब्द हैं

''शोलापुर निवासियों में से हमारे अनेक शुभचिन्तक हमारे पास आते और कहते थे कि मैं कभी कहीं अकेला न जाया करूँ, क्योंकि यह बात खतरे से खाली नहीं है।''

फिर आगे लिखा है कि मैं और स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी नित्य प्रात: 4 बजे उठकर जंगल चले जाते थे। ढाई-तीन मील दूर जाकर शौच-स्नान आदि से निवृत्त होकर प्राय: सात बजे के लगभग लौटा करते थे।

घण्टों तक नगर के बाहर आर्यनगर में ये महात्मा कार्य करते थे। जब नारायण स्वामी जेल चले गये तो स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी अकेले बाहर भ्रमण को जाते। शोलापुर निवासियों ने मुझे स्वयं बताया कि हमने कई बार श्रीमहाराज को रोका, परन्तु लौहपुरुष स्वतन्त्रानन्द का यही उत्तर था कि ''डरना किस बात से? दस-बीस के लिए तो मैं अकेला ही पर्याप्त हूँ।'' मैंने विस्तार से ये बातें लौहपुरुष ग्रन्थ में लिखी हैं।

महात्मा नारायण स्वामी जब जेल गये तो वे अपना मृत्युपत्र (डैथविल) लिखकर गये। इससे स्पष्ट है कि महाराज इस धर्मयुद्ध में जीवन-आहुत करने की पूरी तैयारी करके गये थे। आज आर्यसमाज को ऐसे महान् तपस्वी, निर्भीक, मृत्युंजय, महाबली नेता चाहिए राजनेताओं व शासन की परिक्रमा करने वाले समाज का कुछ न संवार सकेंगे। खेद है आज आर्यसमाज के बड़े कार्यक्रमों में रौनक के लिए शासक बुलाने पड़ते हैं। ढोंगी गुरुओं की भीड़ कितनी हो जाती है। ऐसा क्यों? आज पण्डित लेखराम, आर्यमुनि, श्यामभाईवाली अखण्ड निष्ठा वाले व्यक्तियों के हाथ में हमारी बागडोर नहीं।

आओ, आर्यवीर दल, आर्ययुवक समाजें, आर्यकुमार सभाएँ और व्यायामशालाएँ स्थान-स्थान पर खोलें, तभी हम अभय बन सकेंगे।

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

पृष्ठ 2 का शेष

शेष 6 व्यापार विवादों का भी समाधान हुआ। उन्होंने आगे कहा मुझे पूरा विश्वास है कि यह आपसी विश्वास और रणनीतिक मुद्दों पर द्विपक्षीय संबंधों में एक नए अध्याय की शुरुआत है। इससे न केवल दोनों देशों को बल्कि बड़े पैमाने पर दुनिया को फायदा होगा।

इसके साथ ही फिक्की के पूर्व अध्यक्ष हर्ष पति सिंघानिया ने पीएम मोदी के अमेरिका दौरे को ऐतिहासिक बताया, सिंघानिया ने पीएम मोदी की इस यात्रा को लेकर कहा कि रक्षा, अंतरिक्ष सहयोग और अनुसंधान मुद्दों से संबंधित रणनीतिक समझौते पथप्रदर्शक और महत्वपूर्ण हैं। भारत संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रौद्योगिकी से लाभ उठाएगा और खुद को और अधिक आत्मनिर्भर बनाएगा। इस साझेदारी से नए अवसर पैदा होते हैं। उद्योग जगत में हम यह देखने के लिए बहुत उत्साहित हैं कि आगे क्या होने वाला है और हमारे दोनों देशों के बीच विकास, सहयोग और आगे की आर्थिक वृद्धि के महान अवसर हैं। प्रधानमंत्री मोदी जी की सफल विदेश यात्राओं को लेकर विपक्ष के द्वारा फैलाई जा रही नकारात्मकता का सटीक जवाब वित्तमंत्री, निर्मला सीतारमण, केंद्रीय मंत्री श्री हरदीप पुरी जी ने दिया। इसके साथ ही भाजपा ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अमेरिका यात्रा को अभूतपूर्व बताते हुए शुक्रवार को कहा कि इस दौरान लिए गए कई कूटनीतिक और रणनीतिक फैसलों से आर्थिक प्रगति के साथ नये भारत के निर्माण में मदद मिलेगी। भाजपा नेता एवं केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने पार्टी मुख्यालय में एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि प्रधानमंत्री की यात्रा से रक्षा, सामरिक प्रौद्योगिकी के संबंध में सहयोग, नवीकरणीय ऊर्जा में साझेदारी और खनिज सहयोग के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण परिणाम मिले हैं। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका यात्रा के दौरान कई कूटनीतिक और रणनीतिक फैसले लिये गए, जो आत्मनिर्भर भारत के संकल्प के साथ एक नए भारत के निर्माण में मदद करेंगे और भारतीयों को आर्थिक प्रगति के अवसर प्रदान करेंगे।

अमेरिकी कांग्रेस में प्रधानमंत्री मोदी के भाषण पर 15 बार खड़े होकर तालियां बजाई गईं और सामान्य रूप से 100 से अधिक बार तालियां बजाई गईं। यह न केवल प्रधानमंत्री की अमेरिका यात्रा की विशेषता रही, बल्कि कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भारत-अमेरिका की अभूतपूर्व साझेदारी की गवाही भी थी।

-संपादक

Must Read For Every Hindu

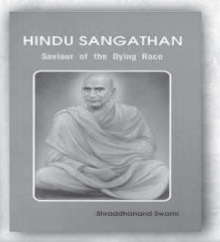

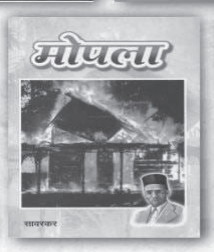

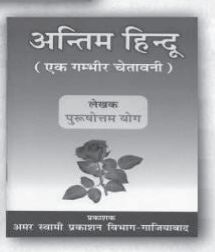

www.vedicprakashan.com
or
9540040339

महर्षि दयानन्द उवाच

परोपकारी एवं प्रेरक शिक्षाएं

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रमुख रचना सत्यार्थ प्रकाश से लेकर उनकी जीवनी, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्य रत्नमाला, सवमंत्वयामंतव्य प्रकाश, उपदेश मंजरी आदि अनेक ग्रंथों से चयनित परोपकारी और प्रेरक शिक्षाएं आर्य संदेश के नियत नियमित कॉलम में महर्षि दयानंद उवाच के नाम से प्रकाशित की जा रही हैं। सभी पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद सरस्वती की इन जनकल्याण कारी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सभी आप इनका सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार करें और महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें...

अंग्रेजों को ज्ञापनः– इससे यह मेरा विज्ञापन है कि आर्यावर्त देश का राजा इंगरेज (अंग्रेज) बहादुर से कि संस्कृत विद्या की ऋषि मुनियों की रीति से प्रकृति कराए, इससे राजा और प्रजा को अनन्त सुख लाभ होगा, और जितने आर्यावर्त वासी सज्जन लोग हैं उनसे मेरा यह कहना है कि इस सनातन संस्कृत विद्या का उद्धार अवश्य करें। ऋषि मुनियों की रीति से तो अत्यन्त आनन्द होगा और जो यह संस्कृत विद्या लोप हो जायेगी तो मनुष्यों को बहुत हानि होगी। इसमें कुछ सन्देह नहीं। **(सार्व. म.द.प व्य. वि पृ. 33)**

अंग्रेज अपदस्थ होंगेः– भारत का बहुत सा धन विलायत जाता है, परन्तु यह बन्दूक की गोली के समान कार्य करेगा। क्योंकि जितना धन जाएगा। अंग्रेज उतने ही आलसी और भोगी (विलास प्रिय) होकर उपदस्थ होंगे। **(श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृ. 286)**

अंग्रेज देश छोड़कर चले जाएँगेः– यदि भारतवासी योग्य बन जाएँगे तो विदेशी लोग स्वयं ही उनसे कह देंगे कि अब तुम योग्य हो गये हो, तुम अपना शासन प्रबन्ध स्वयं करो।

(म. दयानन्द का जीवन चरित्र पृ. 329)

अंग्रेजों से सीखेंः– अंग्रेजों में हमारी अपेक्षा विशेष गुण नहीं हैं। ऐसा मेरा कहना नहीं है, परन्तु उनमें भी बहुत से अच्छे गुण हैं। सो उनके गुणों को हम स्वीकार करें, यही हमें योग्य है।

पूना प्रव. (उपदेश मंजरी) पृ. 63

अक्रोधः– बड़ा भारी जो क्रोध उत्पन्न होता है, उसका सर्वथा त्याग करना चाहिए। स्वाभाविक क्रोध नहीं जा सकता परन्तु उसे भी रोकना, मनुष्य का धर्म है। क्रोधाधीन होने से बड़े-बड़े अनर्थ होते हैं।

पूना प्र. (उपदेश मंजरी) पृ. 12

आर्य सन्देश

क्या आपको डाक प्राप्त करने में कोई असुविधा हो रही है?

क्या आपको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त नहीं हो रहा?

क्या आप आर्य सन्देश साप्ताहिक को ऑनलाइन पढ़ना चाहते हैं?

क्या आप आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित करने में सहयोग करना चाहते हैं?

क्या आप देश-विदेश में रहने वाले अपने मित्रों-दोस्तों, रिश्तेदारों को भी आर्य सन्देश पढ़वाना चाहते हैं?

यदि हां! तो

आज ही अपने मोबाइल में टेलिग्राम एप्प डाउनलॉड करें और नीचे दिए लिंक पर क्लिक करके आर्य सन्देश ग्रुप जॉइन करें
https://t.me/aryasandesh110001

- सम्पादक

आचार्य देवराज शास्त्री स्मृति ग्रंथ का प्रकाशन

आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा के संचालक, गुरुकुल में मुख्य अधिष्ठाता, मंत्री और आचार्य के रूप में अपनी आजीवन सेवाएं देने वाले आचार्य देवराज शास्त्री जी की प्रथम पुण्यतिथि पर स्मृति ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है। इस हेतु आपसे अनुरोध है कि अपना सन्देश, लेख, कविता, आचार्य जी के साथ की फोटो अथवा अन्य स्मृति सामग्री दिनांक 10 जुलाई 2023 तक Email: devrajshastrismritigranth@gmail.com भेजें। निवेदक-

मुख्य संपादक: सुधीर कुलश्रेष्ठ
संपादक: आचार्य जयप्रकाश शास्त्री
संयोजक: मेधाव्रत शास्त्री
संपर्क सूत्र: व्हाट्सएप : 9810897878

शोक समाचार

श्री रविन्द्र कुमार आर्य जी का निधन

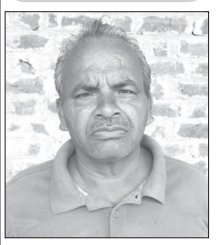

आर्य समाज राजेन्द्र नगर के धर्माचार्य, वैदिक विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी के बड़े भाई श्री रविन्द्र कुमार आर्य जी का 51 वर्ष की अल्पायु में 27 जून 2023 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उनके पैतृक गांव नंगला सिलोनी, एटा में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा 8 जुलाई 2023 को उनके गांव में संपन्न होगी।

श्री सोहन लाल गुप्ता जी का निधन

आर्य समाज पंचदीप पीतमपुरा के संथापक सदस्य एवं वरिष्ठ उपप्रधान श्री मनोहर लाल गुप्ता के बड़े भाई, दानवीर श्री सोहन लाल गुप्ता जी का अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा 2 जुलाई 2023 को वेडिंग ओपेरा, लारेंस रोड में संपन्न होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -संपादक

सोमवार 26 जून, 2023 से रविवार 02 जुलाई, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 28-29-30 जून, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 30 जून, 2023

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर द्वारा दिल्ली सभा के पदाधिकारियों को आर्य महासम्मेलन का निमंत्रण

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी और महामंत्री श्री विनय आर्य जी एवं समस्त पदाधिकारियों को आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर के अधिकारियों द्वारा आगामी 23, 24 सितम्बर 2023 को आयोजित होने वाले आर्य महासम्मेलन का निमंत्रण दिया गया और मार्गदर्शन हेतु भी निवेदन किया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने आभार व्यक्त करते हुए आर्य महासम्मेलन की अपार सफलताओं के लिए शुभकामनाएं प्रदान की और सम्मेलन में पधारने की बात कही।

प्रतिष्ठा में,

विवाह इत्यादि शुभ अवसरों पर
वैदिक मंत्रों के साथ शुभकामनाएं देने के लिए

ऑनलाइन खरीदें
vedicprakashan.com
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

देश और समाज विभाजन के षड़यन्त्र का पर्दाफास
आओ! जानें मनुस्मृति का सच
स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

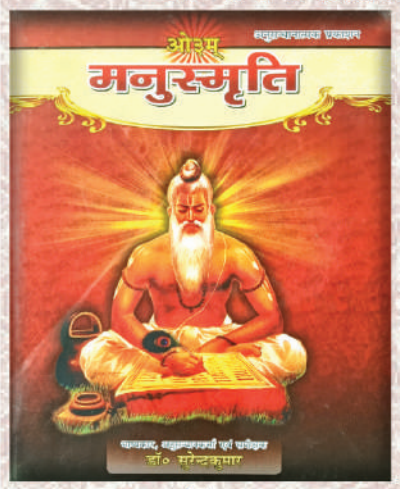

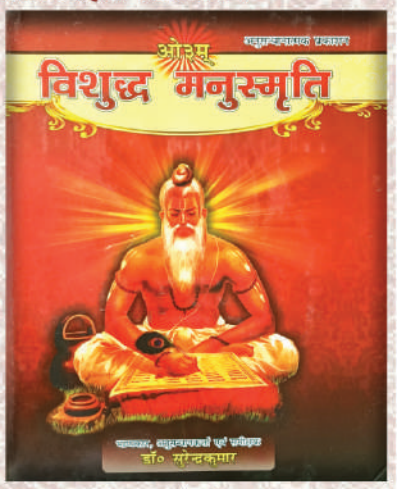

मूल्य : ~~600~~/- 500/-
मूल्य : ~~400~~/- 300/-
मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

प्रकाशकः- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427 मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

JioTV Jio TV+
आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल
आर्य सन्देश टीवी
Arya Sandesh TV
अब जियो टीवी नेटवर्क पर भी
Jio Set Top Box और JIO मोबाइल App पर उपलब्ध

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE
TOWARDS CREATING A
CLEANER | GREENER | SAFER
TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह